

तिब्बत की लोमड़ी आर्क्टिक पहुंची

पहले ऐसा माना जाता था कि आर्क्टिक में पाई जाने वाली लोमड़ी (*वल्पस लेगोपस*) युरोप में विकसित हुई थी और फिर जब ग्लेशियर युग में बर्फ की चादर फैली तो वह आर्क्टिक तक जा पहुंची। यह करीब 26 लाख साल पहले की



बात बताते हैं। मगर अब जो जीवाश्म प्रमाण मिले हैं, उनसे लगता है कि यह लोमड़ी मूलतः तिब्बत की ऊंचाइयों में टंड के प्रति अनुकूलित हुई थी और वहां से आर्क्टिक पहुंची थी।

लॉस एंजेलिस के प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय के पुराजीव वैज्ञानिक ज़ियाओमिंग वांग ने तिब्बत पठार के झंडा कछार और कुनलुन कछार की खोजबीन करते हुए कुछ जीवाश्म प्राप्त किए। समुद्र तल से 4730 मीटर की ऊंचाई पर प्राप्त ये जीवाश्म किसी जंतु के जबड़ों और दांतों के हैं। मिलान करने पर पता चला कि ये फिलहाल ज्ञात 20 लोमड़ी प्रजातियों में से किसी से मेल नहीं खाते। यानी यह एक नई प्रजाति है। इसे *वल्पस किउजुडिंगी* नाम दिया गया है।

इस नई प्रजाति की प्रथम निचली दाढ़ का किनारा काफी पैना है जो सिर्फ मांस खाने के लिए बना लगता है। यह गुण आधुनिक आर्क्टिक लोमड़ी में देखा गया है। वैसे अधिकांश लोमड़ियां मांस और वनस्पति दोनों का भक्षण करती हैं मगर *वल्पस किउजुडिंगी* के दांत ऐसे प्राणी के हैं जो अधिकांशतः मांस ही खाते हैं। ये प्राणी अक्सर अत्यंत

ठंडे वातावरण में पाए जाते हैं। जैसे ध्रुवीय भालू, आर्क्टिक लोमड़ी और आर्क्टिक भेड़िए। वांग का मत है कि तिब्बत की इस नई प्रजाति और आर्क्टिक लोमड़ी में मांस खाने के लिए दांतों के विकास में काफी समानताएं हैं।

रोचक बात यह है कि उक्त जीवाश्म 36 से 51 लाख वर्ष तक पुराने हैं। ये पहले आर्क्टिक लोमड़ी नुमा जीवाश्म हैं जो आर्क्टिक से बाहर मिले हैं। इसके आधार पर वांग को लगता है कि यह स्पष्ट है कि ये आर्क्टिक लोमड़ी के पूर्वज के जीवाश्म हैं।

दूसरी रोचक बात यह है कि बर्फीले युग की कई प्रजातियों के जीवाश्म तिब्बत के पठार में मिले हैं। जैसे वुली राइनो (*सीलोडॉटा तिबेटाना*) और बर्फीला तेंदुआ (*उंसिया उंसिया*)। इस आधार पर कहा जा सकता है कि ऐसे कई जंतु तिब्बत में पनपकर बाद में दुनिया के अन्य हिस्सों में फैले हैं। यानी ये तिब्बत की ठंडी, बर्फीली फिजा में अनुकूलित हुए और बर्फीले युग में अपने फैलते प्राकृत वास में जगह-जगह पहुंचे।

वैसे सभी वैज्ञानिक सहमत नहीं हैं। कुछ वैज्ञानिकों को लगता है कि मात्र दांतों के आधार पर इतने व्यापक निष्कर्ष निकालना उचित नहीं है। बहुत संभावना है कि यह गुण इनमें स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ हो। (*स्रोत फीचर्स*)